भारत सरकार

शिक्षा मंत्रालय

उच्चतर शिक्षा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या- 1124

उत्तर देने की तारीख-02/12/2024

कन्नड़ को शास्त्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देना

†1124. **श्री जी. कुमार नायक:**

क्या **शिक्षा** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार ने कन्नड़ को शास्त्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा देने, विशेष रूप से शास्त्रीय कन्नड़ अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र की स्थापना करने, शास्त्रीय कन्नड़ में प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए दो वार्षिक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार शुरू करने और कन्नड़ अध्ययन के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालयों में अकादमिक पीठ बनाने के लिए 2004 के संकल्प की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो शेष परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है तथा इन्हें कब तक पूरा किया जाएगा;

(ग) गत तीन वर्षों और चालू वर्ष के दौरान शास्त्रीय भाषाओं तमिल, कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, उड़िया, संस्कृत और अन्य के संवर्धन हेतु आवंटित कुल धनराशि का वर्ष-वार ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या निधियों के स्थान में कोई असमानता है, यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ङ) क्या सरकार के पास प्रभावी निधि उपयोग और समय पर परियोजना पूर्ण करने को सुनिश्चित करने के लिए कन्नड़ को अधिक स्वायत्तता प्रदान करने (केन्द्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान के समान) की कोई योजना है?

उत्तर

शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री

(डॉ. सुकान्त मजूमदार)

(क) से (ग): वर्ष 2011 में केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल), मैसूर के अंतर्गत शास्त्रीय कन्नड़ अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र (सीईएससीके) की स्थापना की गई और यह शास्त्रीय कन्नड़ के अनुसंधान, प्रचार, प्रकाशन संबंधी कार्य करता है। सरकार की नीति शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने की है। सीआईआईएल चार शास्त्रीय भाषाओं अर्थात कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और उडिया सहित सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु कार्य करता है। शास्त्रीय तमिल का विकास

और संवर्धन केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान (सीआईसीटी), चेन्नई द्वारा किया जाता है। भारत सरकार तीन केंद्रीय विश्वविद्यालयों के माध्यम से संस्कृत भाषा को प्रोत्साहित कर रही है। इन विश्वविद्यालयों को संस्कृत भाषा में शिक्षण और शोध हेतु निधियां उपलब्ध करवाई जाती है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों को डिग्री, डिप्लोमा, प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं और संस्कृत के शास्त्रीय पहलू से संबंधित किसी भी कार्य हेतु अलग से निधियां प्रदान नहीं की जाती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने कर्नाटक के केंद्रीय विश्वविद्यालय में कन्नड़ में शास्त्रीय भाषा हेतु एक केंद्र को अनुमोदित किया है और वर्ष 2021-22 के दौरान केंद्र के लिए 45.00 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई है। सीआईआईएल द्वारा विभिन्न शास्त्रीय भाषाओं के लिए प्रदान की गई निधियों का विवरण निम्नानुसार है:

(लाख रुपये में)

	वर्ष 2021-22	2022-23	2023-24	2024-25
कन्नड	106.50	171.75	154.50	83.50
तेलुगु	103.15	171.75	154.50	83.50
मलयालम	63.97	186.75	112.50	83.50
तमिल	1200.00	1200.00	1525.00	1430.00
उडिया	58.38	176.75	138.50	83.50

(घ) और (ङ): इन शास्त्रीय भाषाओं हेतु प्रदान की जाने वाली निधियों में कोई असमानता नहीं है। तथापि, निधियां आवश्यकता और उपयोग के अनुसार प्रदान की जाती हैं। वर्तमान में, भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में परिकल्पित क्षेत्रीय भाषाओं और शास्त्रीय भाषाओं सहित भारतीय भाषाओं के समग्र और बहु-विषयक विकास के लिए मार्ग प्रशस्त और अनुशंसित करने हेतु पद्मश्री चामू कृष्ण शास्त्री जी की अध्यक्षता में एक उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन किया है। वर्तमान में, शास्त्रीय कन्नड़ भाषा को और अधिक स्वायत्तता प्रदान करने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

*****